6/06/2020

Pedagogy of Commerce

B.Ed.
Ist Year

Problem-Solving Method

समस्या - समाधान पद्धति

समस्या - समाधान पद्धति वर्तमान युग की एक विवादग्रस्त पद्धति है। कुछ लोग इसे पद्धति न मानकर केवल एक विधी मानते हैं, परन्तु वास्तव मे यह एक पद्धति ही है

योजना पद्धति से भी इस पद्धति की समानता को जोडा गया है जबकि प्रयोजनवादी दार्शनिक विचारधाराओं का परिणाम है, जबकि समस्या पद्धति मनोविज्ञान की आधुनिक विचारधाराओं का परिणाम है। समस्या पद्धति के अन्तर्गत छात्रों के सम्मुख एक समस्या का निर्माण छात्रों के सहयोग से किया जाता है। यह समस्या छात्रो के लिए चुनौती होती है। छात्र अपनी अवस्था प्रभाव से तुरन्त इसे पूरा करने का प्रयास करते हैं।

समस्या के प्रकार

समस्या मुख्यत: दो प्रकार की होती हैं,

प्रथम प्रकार की समस्या → सरल अत्यन्त सीधी - सादी जिनके लिए तर्क शक्ति से काम नही लेना पडता है। प्राथमिक या छोटी कक्षाओं के लिए उपयुक्त,

द्वितीय प्रकार की समस्या ⇒ जटिल समस्याए, या वे समस्याएँ जिनके लिए गहन चिन्तन तथा मनन करना करना पडता है। उच्च स्तर के छात्रों के लिए उपयुक्त

समस्या पद्धति के सोपान

प्रथम प्रकार की समस्याओं के समाधान में छात्रों को निम्नांकित चार चरणों से गुजरना पडता है —

(i) समस्या का निर्माण करना, (ii) समस्या का महत्त्व बनाना,
(iii) आवश्यक तथ्यो का सकंलन, संगठन तथा व्यवस्थित करना,
(iv) व्यवस्थित तथ्यों का मूल्यांकन करना,

Scanned with CamScanner

दूसरी प्रकार की समस्याएं जटिल होती हैं। जान ड्यूवी ने अपनी पुस्तक 'हाऊ वी थिंक' में निम्नांकित पाँच सोपानों का उल्लेख किया है –

(1) सम्भावित समाधान का पता लगाना,
(2) समस्या की जटिलता का बौद्धिकरण,
(3) उपकल्पना का निर्माण करना,
(4) उपकल्पना पर विस्तृत रूप से विचार करना,
(5) उपकल्पना की जाँच करना,

अच्छी समस्या के आवश्यक तत्व :- (i) समस्या छात्रों की आवश्यकता, रूचि तथा योग्यता के अनुसार हो,
(ii) समस्या ऐसी हो, जिसे छात्र अपने जीवन से सम्बन्धित समझे।
(iii) समस्या उपयोगी हो। (iv) समस्या स्पष्ट होनी चाहिए।
(v) समस्या के समाधान से छात्रों का ज्ञानार्जन होना चाहिए।
(vi) समस्या के समाधान एवं निष्कर्ष सीधे, स्पष्ट तथा निश्चित होने चाहिए।

पद्धति के गुण :- पद्धति हमें समस्या का समाधान करना सिखाती है। यह पद्धति छात्रों की चिन्तन, मनन, एवं विश्लेषण शक्ति का पर्याप्त विकास करती है। पद्धति मनोवैज्ञानिक है। पद्धति के अन्तर्गत छात्र उपकल्पनायें बनाना, उनकी जाँच करना एवं निष्कर्ष निकालना सीखते हैं। छात्र अत्यधिक सक्रिय रहते हैं। यह पद्धति दृष्टिकोण की व्यापकता, सहनशीलता, उत्तरदायित्वशीलता जैसे महान नागरिक गुणों का विकास करती है।

पद्धति के दोष :- बार-बार के प्रयोग से समस्या पद्धति की सरसता तथा आकर्षण समाप्त हो जाने का भय रहता है। कभी-कभी समस्या का निर्माण अत्यन्त कठिन हो जाती है। समस्याओं का छात्रों के मानसिक स्तर के अनुरूप न होने का भय सदैव बना रहता है। सभी अध्यापक इस पद्धति का सफलतापूर्वक प्रयोग नहीं कर सकते हैं।

Complete

Scanned with CamScanner